समावेशी भारत और शिक्षा

डॉ॰ वीरेन्द्र सिंह यादव
अध्यक्ष-हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग
डॉ॰ शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ, (उ॰प्र॰)

एम्पायर बुक्स इन्टरनेशनल

प्रकाशक

एम्पायर बुक्स इन्टरनेशनल

4831/24, प्रह्लाद गली, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली–110002
फोन : 23275511, 23257835
फैक्स : 91-011-23257835
e-mail : arpanpublications@gmail.com

समावेशी भारत और शिक्षा

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2017
ISBN 978-93-86846-11-2

टाइपसैटर:
रिशु कम्प्यूटर्स
दिल्ली–110092

अमित वर्मा द्वारा ''इम्पायर बुक्स इन्टरनेशनल'' के लिए प्रकाशित एवं रोशन ऑफसैट प्रिन्टर्स, दिल्ली से मुद्रित

8

समावेशी शिक्षा की अवधारणा

डॉ0 गौरी त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर–हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग
डॉ0 शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, मोहान रोड, लखनऊ

एक युवा लोकतंत्र के तौर पर भारत शिक्षा के मोर्चे पर बहुत तेजी से प्रगति कर रहा है। राष्ट्र की बुनियाद रखने वालों ने शैक्षिक विकास को पर्याप्त महत्त्व प्रदान कर जो दूरदर्शिता दिखाई थी, उसका भरपूर लाभ हमें मिला है। शिक्षा का भारत में ऐतिहासिक रूप से ही महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन भारत में पुरोहित वर्ग ज्ञान प्राप्त करने के लिए अध्ययन करता था, जबकि क्षत्रिय एवं वैश्य विशिष्ट उद्देश्यों के लिए जैसे विमान, युद्धकला अथवा व्यापार सीखने के लिए अध्ययन करते थे। प्राचीन शिक्षा प्रणालियों का उद्देश्य जीविकोपार्जन था। विदेशों से उच्च शिक्षा हेतु आने वाले छात्रों के लिए भी भारत शीर्ष स्थल था। सबसे बड़े शिक्षा केंद्रों में से एक नालंदा में ज्ञान की सभी शाखाएं थीं और अपने चरमोत्कर्ष काल में उसमें 10,000 तक छात्र रहते थे।

स्वतंत्रता के बाद नीति निर्माताओं ने अंग्रेजों द्वारा निर्मित कुलीनतावादी शिक्षा प्रणाली को जन सामान्य की उस शिक्षा प्रणाली में बदलने के लिए कठिन परिश्रम किया, जो समानता एवं सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर खड़ी थी। वर्ष 2009 में शिक्षा के अधिकार का विचार देते हुए इसे मौलिक अधिकार बना दिया गया और राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा भी की गई। उसके बाद से नीति निर्माताओं ने सर्व शिक्षा अभियान और मध्याह्न भोजन योजना जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से सभी को शिक्षा उपलब्ध कराने का

प्रयास किया है। आज भारत को तेजी
रूप में ही नहीं बल्कि उपयुक्त एवं शिक्षि
संसाधन के विशाल समूह के रूप में भी
प्राप्त है। उच्च शिक्षित, तकनीक को स
प्रशिक्षित भारतीय नागरिक दुनिया के क
कर रहे हैं और भारत का मान बढ़ा रहे हैं
कुछ वर्षों में स्मरणीय उपलब्धियों में श
समय भारत की साक्षरता दर केवल 12.
के अनुसार आज हमारी साक्षरता दर 7
साथ केरल और 91.58 फीसदी के साथ
राज्यों को भी ऊंचाई तक पहुँचने के लि

इस यात्रा में चुनौतियां भी रही हैं औ
करना कई लोगों के लिए अभी तक सपन
एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लि
होतीं अथवा बारिश या बर्फबारी होने पर स्
होती। आदिवासियों, हाशिये पर धकेले ग
जनजाति को शिक्षा की उचित सुविधा उ
की प्रक्रिया में शामिल करने का प्रयास व
चिंता का बड़ा विषय है। दुर्गम स्थानों पर स
क्षेत्रों में लड़कियों के लिए शौचालयों की क
पैदा होती है, जिसके परिणामस्वरूप स्कूल
स्तर तक पहुँच गई है। शिक्षा संबंधी योज
एकदम भुलाया जाता रहा है, जिन्हें विशे
जिनकी विशेष आवश्यकताएं हैं। अब इन मा
है और सरकार समाज के इन वर्गों को प्राथमि
वृद्धि के लिए विभिन्न योजनाओं पर काम
नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी जैसे विभिन्न कार
बेहतर पहुँच उपलब्ध कराने के लिए प्रौद्यो
अंतर्निहित निगरानी एवं प्रभावी मूल्यांकन प्रण
कालेज के स्तरों पर व्यावसायिक शिक्षा को बढ़
अनुभव की गई है।